Van Vihar

मध्यप्रदेश वन विभाग

BNHS India CONSERVING NATURE SINCE 1883

गिद्ध पर्यावरण के सर्वप्रमुख सफाईकर्मी पक्षी हैं।

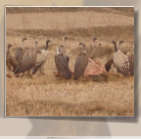

हमारे देश के पर्यावरण की सफाई में जिप्स प्रजाति के गिद्धों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

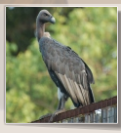

1980 के दशक में भारत में करोड़ो की संख्या में गिद्ध हुआ करते थे। परंतु कुछ ही सालों में इन गिद्धों की अत्यधिक संख्या में मृत्यु हुई, जिस कारण उनकी आबादी में विपत्तिपूर्ण गिरावट आयी। अब यह गिद्ध अपनी मूल संख्या के केवल 1% ही शेष बचे हैं।

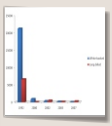

वैज्ञानिकों ने अनुसंधान द्वारा यह पाया है की गिद्धों की तेजी से घटती हुई संख्या का प्रमुख कारण पशु इलाज में उपयोग हाने वाली डाइक्लोफेनेक नामक दवा है। यह दवा दर्द निवारण और सूजन को कम करने हेतु इंसानों एवं पशुओं के लिए प्रयोग होती है। यदि गिद्ध डाइक्लोफेनेक युक्त पशु का शव खा ले, तो गुर्दे खराब होने के कारण उसकी मृत्यु हो जाती है।

भारत सरकार ने गिद्धों को बचाने हेतु पशु चिकित्सा में डाइक्लोफेनेक के प्रयोग, बनाने व बेचने पर प्रतिबन्ध लगा दिया है, और वैकल्पिक दवाई मेलोक्सिकैम के इस्तेमाल की सलाह दी है, जो गिद्धों के लिए सुरक्षित पायी गई है।
जुलाई 2015 में भारत सरकार ने मानव हेतु उपलब्ध डाइक्लोफेनेक की बहुखुराक शीशियों के उत्पादन और संचलन पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया है जिससे इसका उपयोग गैरकानूनी रूप से पशु चिकित्सा में न हो पाये।

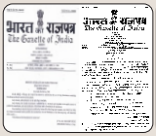

भारतीय जिप्स गिद्धों को विलुप्ति से बचाने हेतु भारत सरकार ने कई जगहों पर गिद्ध संवर्धन प्रजनन केंद्र स्थापित किये हैं।

इन केंद्रों में गिद्धों को प्रकृति जैसे अनुकूल कृत्रिम आवासों में रखा गया है, जहाँ वे ठीक उसी तरह रहते हैं जैसे वे प्रकृति में रहते हैं। ऐसे वातावरण में वे प्रजनन कर अपनी संख्या बढ़ाएंगे। यह केन्द्र प्रकृति में गिद्धों को विलुप्ति से बचाने हेतु एक बीमा योजना का स्वरूप है।

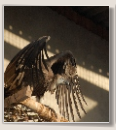

आप भी इस कार्य में सहायता कर सकते हैं। पशु चिकित्सा में डाइक्लोफेनेक, कीटोप्रोफेन एवं एसीक्लोफेनेक दवाओं का प्रयोग न कर केवल मेलोक्सीकेम का प्रयोग करें।

हमारा परम लक्ष्य इन राजसी परिंदों को कई दशकों तक प्रकृति में बनाये रखना है।

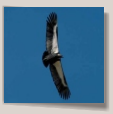

Van Vihar

मध्यप्रदेश वन विभाग

BNHS India CONSERVING NATURE SINCE 1883

मेलोक्सिकैम को अपनाओ जटायु के वंशजो को बचाओ।
डाइक्लोफेनेक हटाओं खुद को दूसरा रावण मत बनाओ।।

क्या आप दूसरा रावण बनना चाहोगे?

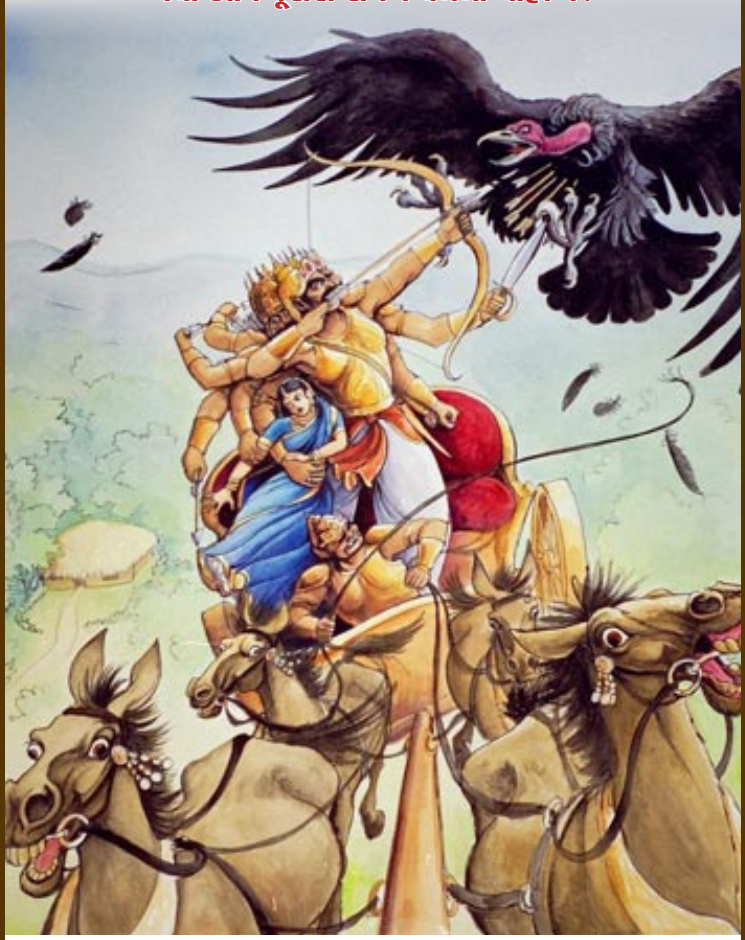

रामायण के अनुसार रावण ने जटायु का वध किया था,
परंतु हम ने तो जटायु की पूरी आबादी को ही
विनाश की दिशा मे धकेल दिया है।

क्या हम रावण से भी अधिक क्रूर है?

भारत में गिद्धों की विलुप्तप्राय प्रजातियों का घटनाक्रम

1980 के दशक में भारत में गिद्धों की आबादी अनुमानतः 4 करोड़ थी।

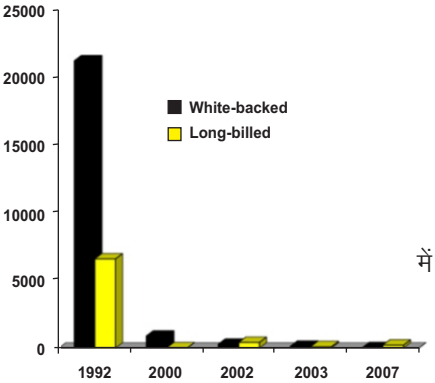

1995 के पश्चात् गिद्धों की आबादी में भारी गिरावट देखी गई।

2000 तक गिद्धों की आबादी 99% से घाट चुकी थी और वे अंत्यंत संकटग्रस्त प्रजाति की श्रेणी में दर्ज किये गए।

2004 में अनुसंधान द्वारा यह प्रतीत हुआ की गिद्धों की मृत्यु पशु चिकित्सा में उपयोग हो रही दर्द निवारक दवा diclofenac से हो रही है।

भारत में गिद्धों की विलुप्तप्राय प्रजातियों का घटनाक्रम

डाइक्लोफिनेक

72 घंटे के अंदर मृत्यु

डाइक्लोफिनेक युक्त शव

गिद्धों द्वारा शव का भक्षण

मृत्यु

तत्पश्चात एक वरिष्ठ केंद्रीय शासकीय अधिकारीयों की बैठक में गिद्धों को विलुप्ति से बचने हेतु उठाये जाने वाले कदम पर विचार विमर्श किया गया।

2004 में लिये निर्णयों के तहत :–

- पशुचिकित्सा हेतु diclofenac के उत्पादन, वितरण, एवं उपयोग पर पूरी तरह से प्रतिबन्ध लगाया जाए।
- गिद्धों की बची आबादी में से कुछ आबादी की गिद्ध संरक्षण प्रजनन केंद्र में सुरक्षित रखा जाए, जो उनकी संभावित विलुप्ति को टालने का कार्य करेंगे।

भारत में गिद्धों की विलुप्तप्राय प्रजातियों का घटनाक्रम

2006 में देश का सबसे पहला गिद्ध संरक्षण प्रजनन केंद्र हरियाणा के पिंजौर में स्थापित किया गया। तत्पश्चात भारत के अन्य राज्यों में कई स्थानों पर ऐसे गिद्ध संरक्षण प्रजनन केंद्र स्थापित किये गए, नामतः पश्चिम बंगाल में राजा भात खावा, असम में रानी, मध्यप्रदेश में भोपाल, आदि।

2014 में मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल स्थित गिद्ध संरक्षण प्रजनन केंद्र कार्यरत किया गया, जो गिद्धों के लिए प्रदेश का ऐसा पहला उपक्रम था और भारत का चौथा।

उक्त केंद्र पर गिद्धों की दो अंत्यंत संकटग्रस्त प्रजातियां नामतः सफ़ेद पीठ गिद्ध एवं भरतीय देशी गिद्ध राखी गई है।

2014 में उक्त केंद्र पर कुल 21 गिद्ध लाये गए। तत्पश्चात, अक्टूबर 2016 तक 29 गिद्ध और लाये गए। इस प्रकार कुल founder population 50 गिद्धों का था।

भारत में गिद्धों की विलुप्तप्राय प्रजातियों का घटनाक्रम

2016-17 में केंद्र पर रखे कुछ गिद्धों ने प्रजनन प्रारम्भ किया। प्रथम वर्ष दोनों प्रजातियों के 1–1 चूजे ने केंद्र पर जन्म लिया।

2020-21 में सबसे अधिक 6 चूजों ने केंद्र पर जन्म लिया जिनमे से 5 चूजे सफलता पूर्वक बड़े हुए एवं वर्त्तमान में स्वस्थ हैं। अब तक केंद्र में 14 चूज़ों ने सफलता पूर्वक जन्म लिया है।

2022 में केंद्र पर गिद्धों के अण्डों को कृत्रिम रूप से सेने हेतु incubation center बनाया जा रहा है। इससे गिद्धों की प्रजनन प्रक्रिया को और तेज़ एवं सफलता पूर्वक बनाया जा सकता है।